AI बनाम मानव निर्मित कला

भाष्कर पांडे, शोधार्थी, चित्रकला विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, परिसर अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

प्राचीन समय से ही मानव अपनी समझ, कल्पनाशीलता को बढ़ता आया है। निरंतर रचनात्मक रहना ही मानव की उन्नति में सहायक सिद्ध हुआ है। प्रागैतिहासिक काल से ही मनुष्य ने अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त करने के माध्यमों को समझा और इस्तेमाल किया। जिनके आधार पर हम वर्तमान में रहकर भी भूतकाल में मानव सभ्यताओं के इतिहास आदि की जानकारी हासिल कर पाये हैं। कला निरंतर चलने वाली सम्पूर्ण विश्व की एक मात्र शक्ति है जो मानव समुदाय को एक सूत्र में बांधने का कार्य करती है। दूसरी तरफ AI है जो मानव की रचनात्मकता और कला के प्रति प्रेम को दर्शाती है। जिसका अर्थ कृत्रिम तरीके से विकसित की गयी बौद्धिक क्षमता या मशीनों द्वारा मानव की विचार प्रक्रियाओं का अनुकरण कर मानव बुद्दिमत्ता की नकल करना माना जा सकता है।

1950 में मशीनों के इंसानों की तरह सोच–समझ कर कार्य करने को AI कहा गया, जिसके बाद AI में निरंतर हुए बदलावों से इसकी परिभाषा बदलती रही। तकनीकी रूप में जल्दी और नवीन कार्यों को तुरंत कर पाने की अपनी खासियत के कारण वर्तमान में AI तेजी से हमारे जीवन में बदलाव ला रही है।

AI बनाम मानव निर्मित कला की स्वीकृति– AI ने अबिव्यक्ति के लिए नवीन द्वार खोल दिये हैं। न सिर्फ कलाकार बल्कि कला कौशल में परांगत न होने पर भी मानव AI का इस्तेमाल कर अपनी अभिव्यक्ति कर पाने में सक्षम हुआ है। वर्तमान में डिजिटल मार्केटिंग, वीडियो गेम, विज्ञापन, डिज़ाइनिंग आदि के लिए AI की सहायता लेकर पल भर में ही कृत्रिम कला प्राप्त की जा सकती है। मानव निर्मित कला का उद्देश्य अपनी आन्तरिक अनुभूति को अभिव्यक्त करना है। जिसमें मानव अनुभवों, समाज, भाव, प्रकृति आदि से प्रेरणा लेकर सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक परम्पराओं के साथ मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करता है। मानव अपनी कल्पनाशीलता और रचनात्मकता के मध्याम से एक से बढ़कर एक कृतियों का निर्माण कर सकता है। मानव मस्तिष्क बिना किसी की नक़ल किये निरंतर नवीन रचनात्मक कला सृजन में तत्पर रहता है।